DR. LALIT SAGAR
B.A-1
PAPER-1
UNIT-5

Scanned by CamScanner

6 Bottom Relief of Atlantic Ocean :→

पश्चिम में उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका और पूर्व में यूरोप तथा अफ्रीका के मध्य स्थित अटलांटिक महासागर 820 लाख वर्ग किमी क्षेत्र में विस्तृत है, जो कि समस्त विश्व के क्षेत्रफल का 1/6 भाग है। इसका आकार अंग्रेजी भाषा के 'S' अक्षर के समान है। आंध्र महासागर दो में सर्वाधिक चौड़ा है। 35° दक्षिणी अक्षांश पर इसकी पू० प० चौड़ाई 3700 मील है। भूमध्यरेखा की ओर यह निरंतर संकरा होता गया है। साओरॉक अंतरीप तथा लाइबेरिया तट के बीच चौड़ाई 1600 मील ही है। उत्तर की ओर चौड़ाई पुनः बढ़कर 40°N अक्षांश पर यह चौड़ाई 3000 मील है। सीमांत सागरों तथा विस्तृत महाद्वीपीय मग्नतट के कारण आंध्र महासागर के समस्त क्षेत्रफल का 54% भाग 4800 मीटर से कम गहरा है। आंध्र महासागर के समस्त नितल में 4 प्रमुख रूप देखने में मिलता है।

(१) महाद्वीपीय मग्नतट →

मग्नतट आंध्र महासागर के दोनों तटों पर पर्याप्त विस्तृत है। कहीं पर इसकी चौ० 80 km से अधिक हो जाती है तो कहीं पर यह 2 से 4 km. ही रह जाती है। बिस्के की खाड़ी से उत्तमाशा अंतरीप के बीच अफ्रीका का मग्नतट तथा 5° द० से 10° द० अक्षांश के बीच ब्राजील का मग्नतट संकरा हो गया है। इसके विपरीत उ० अमेरिका के उ०पू० भाग तथा उ०प० यूरोप के मग्नतट 240–400 km तक चौड़े हैं। न्यूफाउण्डलैंड (ग्राण्ड बैंक) तथा ब्रिटिश द्वीप (डागर बैंक) के चारों ओर तथा बाहिया ब्लांका तथा अन्टार्कटिका के बीच चौड़े मग्न-तट पाये जाते हैं। मग्नतट स्थित सीमांत सागरों में हडसन की खाड़ी, बाल्टिक सागर, उत्तरी सागर, डेविस जलडमरूमध्य आदि प्रमुख हैं। आंध्र महासागर के मग्नतट स्थित द्वीपों में ब्रिटिश द्वीप, न्यूफाउण्डलैंड, प० द्वीपसमूह चाप, आइसलैण्ड, सेण्ट हेलना, ट्रिनिडाड, जार्जिया, क्नारी, केपवर्डे आदि प्रमुख हैं। आंध्र महासागर के आंतरिक सागरों में रूमा एवं कैरेबियन सागर प्रमुख है।

(२) मध्य अटलांटिक कटक :→

दक्षिण में बुवेट द्वीप तक 'S' अक्षर के आकार में 14,400 K.m की लंबाई में फैला है। यह कहीं भी सागर तल से 4000 मीटर से नीचे नहीं जाता है। यद्यपि यह कटक कभी पश्चिम तो कभी पूरब की ओर मुड़ जाता है, परन्तु इसकी मध्यवर्ती स्थिति सदा बनी रहती है। भूमध्य रेखा के उत्तर इस कटक को डालफिन उभार तथा द० में चैलेंजर उभार कहते हैं। आइसलैण्ड और स्काटलैण्ड के मध्य इस कटक को विविल थॉमसन कटक कहते हैं। ग्रीनलैंड के दक्षिण में कटक चौड़ा हो जाता है, जिसे टेलिग्राफिक पठार कहते हैं। 50° N अक्षांश के पास इस कटक की शाखा न्यूफाउण्डलैण्ड उभार के नाम से न्यूफाउण्डलैण्ड तट तक चली जाती है। 40° उत्तरी अक्षांश के दक्षिण मध्यवर्ती कटक से एक शाखा अलग होकर अजोर्स उभार के नाम से अजोर्स तट की ओर जाती है। भूमध्यरेखा पर सियरालियोन उभार उ० पू० की ओर तथा पारा उभार उ० प० की ओर मध्यवर्ती कटक की दो शाखाओं के रूप में चले जाते हैं। 40° द० अक्षांश के पास इस कटक की एक शाखा वालविस कटक अफ्रीका के तट की ओर तथा दूसरी शाखा रायोग्रेंडी उभार के नाम से द० अमेरिका की ओर उन्मुख हो जाती है।

प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत के आधार पर इसका निर्माण उ० अमेरिका तथा द० अमेरिका तथा यूरोप-अफ्रीका के प्लेट के रचनात्मक किनारे के अलगाव तथा नीचे से मैग्मा के ऊपर की ओर उद्वेलित होकर आगमन के कारण हुआ है।

(iii) द्रोणी :→

मध्यवर्ती अटलांटिक कटक द्वारा अंध महासागर दो विस्तृत द्रोणियों में विभाजित हो जाता है। इन दो वृहद् द्रोणियों में पुनः कई छोटी-2 द्रोणियाँ भी पायी जाती हैं। जिनमें निम्नलिखित हैं।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner